प्रकाशन वर्ष 2018
भाषा : हिन्दी

माह : जुलाई
आठवां अंक

भक्ति दर्शन

भक्ति का महासंगम

जगन्नाथ रथयात्रा - देवशयनी एकादशी - गुरू पूर्णिमा - श्रावण मास
मंगला गौरी व्रत - हृदय महोत्सव - जुलाई माह का राशिफल

जगन्नाथ रथयात्रा

रथ यात्रा तिथि :–

14 जुलाई 2018 (शनिवार)

द्वितीय तिथि प्रारम्भ : 04:32 (14 जुलाई 2018)

द्वितीय तिथि समाप्त : 00:55 (15 जुलाई 2018)

जगन्नाथ रथ यात्रा:–

जगन्नाथपुरी की रथ यात्रा हिन्दू कैलेंडर के अनुसार आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया में प्रारम्भ होती है। हिन्दू धर्म में यह यात्रा एक उत्सव की तरह मनाई जाती है, क्योकि अपने समस्त भक्तों को भगवान जगन्नाथ गर्भगृह से निकल कर साक्षात दर्शन देते हैं। या कहें, भगवान जगन्नाथ रथ यात्रा के बहाने अपनी प्रजा से मिलते हैं और उनके साथ –साथ यात्रा करते हैं।

जगन्नाथ भारतवर्ष के उड़ीसा राज्य में स्थित है। खूबसूरत समुद्र के किनारे और नारियल के पेड़ों के बीच बसा यह जगन्नाथ का भव्य मंदिर पर्टकों के बीच भी काफी प्रसिद्द है। इस मंदिर में जगन्नाथ, उनके बड़े भाई बळिभद्र, बहन सुभद्रा और सुदर्शन चक्र की मूर्तियां हैं। देवी सुभद्रा अपने दोनों भाइयों के मध्य में विराजमान हैं।

मंदिर की विशेषता :–

यह मंदिर कई मायनों में अन्य मंदिरों से अलग है, यहां भगवान की मूर्तियां पूर्ण न होकर अधूरी हैं। देवी सुभद्रा पीत वर्ण, बळिभद्र श्वेत वर्ण तथा भगवान जगन्नाथ श्याम वर्ण के हैं। इन मूर्तियों का निर्माण नीम की लकड़ी से किया जाता है। विश्व में केवल यही एक मंदिर है जहाँ भगवान शरीर बदलते हैं अर्थात वे अपना पुरातन शरीर छोड़कर नविन शरीर धारण करते हैं और इस क्रिया को 'नवकलेवर' कहते हैं। नवकलेवर केवल उस वर्ष मनाया जाता है जिस वर्ष दो आषाढ़ मास आते हैं तथा यह संयोग 11 अथवा 19 वर्षों में आता है। नवकलेवर में ही विशेष नीम के पेड़ का चुनाव किया जाता है, जिससे मूर्तियां बननी हैं।

रथयात्रा का वर्णन :–

रथयात्रा में तीनों के लिए तीन अलग–अलग रथ तैयार किये जाते हैं, रथयात्रा में भी देवी सुभद्रा का रथ बीच में और बलराम का रथ सबसे आगे तथा भगवान जगन्नाथ का रथ सबसे पीछे होता है।

सबके रथों के नाम भी अलग अलग हैं– भगवान् जगन्नाथ का रथ नंदिघोष के नाम से जाना जाता है और इसकी ऊचाई 45.6 फीट होती है, बलराम जी का रथ तालध्वज नाम से विख्यात है जिसकी ऊंचाई 45 फीट और देवी सुभद्रा 44.6 फीट ऊँचे दर्पदलन रथ में सवार होती हैं।

रथयात्रा की पौराणिक कथा :–

रथयात्रा देवी सुभद्रा का अपने मायके के प्रेम के कारण मनाया जाता है, कहते हैं जब भी वह अपने मायके आती थी तब रथ में बैठ कर पूर्ण राज्य की यात्रा करती थी और उनके साथ कृष्ण और बलराम भी होते थे। यह रथयात्रा जगन्नाथ मंदिर से शुरू होती है और पुरी नगर से गुजरती हुई गुंडिचा मंदिर पहुँचती है। जहाँ प्रभु अपने भाई बहनों के साथ सात दिनों तक विश्राम करते हैं। कहा जाता है कि गुंडिचा मंदिर भगवान जगन्नाथ की मौसी का घर है। मान्यता है रथयात्रा के तीसरे दिन देवी लक्ष्मी भगवान जगन्नाथ को ढूंढते हुए यहां आती हैं, किन्तु दैतापति मंदिर के कपाट बंद कर देते हैं जिससे माता लक्ष्मी रुष्ट होकर रथ का पहिया तोड़ देतीं हैं और 'हेरा गोहिरी साहीपुरी' नामक स्थान पर जहाँ उनका मंदिर है, लौट जातीं हैं। फिर भगवान जगन्नाथ देवी लक्ष्मी को मनाने भी जाते हैं। यह रूठने मनाने की प्रक्रिया अभिनय द्वारा प्रस्तुत भी की जाती है, जो एक अलग ही दिव्य वातावरण का अनुभव कराती है।

देवशयनी एकादशी

देवशयनी एकादशी व्रत मुहूर्त:–

23 जुलाई 2018 (सोमवार)

एकादशी तिथि प्रारम्भ : 14:47 बजे (22 जुलाई 2018)

एकादशी तिथि समाप्त : 16:23 बजे (23 जुलाई 2018)

एकादशी पारण समय : 05:41 से 08:24

(24 जुलाई 2018)

देवशयनी एकादशी का महत्व :–

देवशयनी एकादशी आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को कहा जाता है। यह एकादशी अत्यंत पावन मानी जाती है। इस दिन भगवान विष्णु आने वाले चार माह के लिए विश्राम करते हैं, अर्थात वह क्षीर सागर में अनंत शेष नाग की शय्या पर सो जाते हैं। इसी कारण इसे देवशयनी एकादशी कहा जाता है। इस दिन के बाद से हिन्दू धर्म में चार माह तक शुभ कार्य नहीं किये जाते। इस समय सन्यासी भी यात्रा नहीं करते, एक ही जगह पर तप करते हैं। कहा जाता है, इस समय काल में तीर्थ यात्रा भी नहीं की जाती केवल ब्रिज की यात्रा की जा सकती है। क्योकि इस समय सभी तीर्थ ब्रिज में आकर निवास करते हैं। सभी शुभ कार्य जैसे यज्ञोपवीत, गृह प्रवेश, विवाह, मुंडन आदि कार्य इस दिन से बंद होकर कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी से शुरू होते हैं, यह एकादशी देवउठनी एकादशी कहलाती है।

देवशयनी एकादशी पूजा विधि :–

देवशयनी एकादशी व्रत की पूर्व रात्रि भोजन में नमक न लें। एकादशी के दिन प्रातःकाल उठकर नित्यकर्म के पश्चात् किसी पवित्र नदी में स्नान करें। यदि नदी न हो तो घर पर ही जल में थोड़ा गंगाजल मिलाकर उसे शुद्ध कर नहा लें, स्नान करते हुए **"ॐ नमो भगवते वासुदेवाय"** का जाप भी करते रहे। इसके पश्चात् सूर्य को अर्घ्य दें, और फिर मंदिर को गंगाजल से पवित्र कर पूजा आरम्भ करें। सर्वप्रथम भगवान विष्णु की सोने, चांदी अथवा पीतल की मूरत को स्नान कराएं और फिर उन्हें साफ कपडे से पोंछ लें। तत्पश्चात मंदिर में घी अथवा तिल के तेल का दीपक

जलाएं। अब भगवान विष्णु को चन्दन का तिलक लगाएं और उनके चरणों में कुमकुम और अक्षत समर्पित करें। इसके बाद धुप तथा अगरबत्ती भगवान् को दिखाएं, और तत्पश्चात उनके चरणों में पुष्प तथा पात्र अर्पित करें। भगवान् विष्णु को पीला रंग अति प्रिय है इसलिए पीले रंग के पुष्प चढ़ाना उत्तम है। अंत में भगवान को नैवेद्य अर्पित करें और उनकी घी के दीपक से आरती उतारें। इसके पश्चात् विष्णु सहस्त्रनाम का जाप करें, तथा एकादशी व्रत की कथा पढ़ें अथवा सुने।

देवशयनी एकादशी की व्रत कथा :–

एक नगर की बात है, सतयुग में राजा मंधाता एक राज्य के राजा थे। उनके राज्य में प्रजा हर प्रकार से सुखी थी। न धन की कमी, न वर्षा की कमी, न फसल की और न ही कोई बीमारी थी वहा। यह सब राजा के पुण्यों का ही फल था। प्रजा अपने राजा से अत्यंत प्रेम करती थी और राजा भी अपनी प्रजा को अपनी संतानों की तरह समझता था और उनकी हर जरूरतों का ध्यान रखता था। इसी प्रकार सुख में अनेक वर्ष बीत गए। किन्तु कुछ वर्षों बाद एक ऐसा समय आया जब वहां वर्षा होनी बंद हो गयी और राज्य में सूखा पड़ गया। धीरे धीरे नदियां भी सूखने लगी और जानवर भी प्यासे मरने लगे। सभी लोग इस से दुखी थे, किसी को कुछ समझ नहीं आता था की ऐसा क्या पाप हो गया जो इंद्र देव रूठ गए और वर्षा बंद हो गयी। धीरे धीरे वर्ष पर वर्ष बीतने लगे किन्तु वर्षा नहीं हुई। अपनी प्रजा की ऐसी हालत देख राजा भी

अत्यंत दुखी हो गया था। उसने कई विद्वानों और ज्योतिषों को अपने महल बुलाया और उनके बताये हर उपाय को निष्ठा पूर्वक किया किन्तु फिर भी वर्षा नहीं हुई।

परन्तु अब राजा से अपनी प्रजा का दुःख और देखा नहीं गया, उसने निश्चय किया की वह महल छोड़ कर जंगलों में ऋषि मुनियों से इसका हल पूछेगा और तब तक राज्य में नहीं लौटेगा जब तक कोई ऋषि उसका सटीक उपाय न बताये।

ऐसा निश्चय कर वह जंगल की ओर चल दिया। कई दिन बीते, राजा को बहुत ऋषि मुनि मिले किन्तु कोई इसका उपाय नहीं बता पाया। और अंत में वह ब्रह्मा जी के पुत्र ऋषि अंगिरा के आश्रम पहुंचे। वहा के दिव्य वातावरण में उसे बहुत शांति मिली और उसकी समस्या के हल के लिए उसकी आशा भी प्रबल हो गयी। उसने हाथ जोड़कर ऋषि अंगिरा को प्रणाम किया और अपने राज्य का सारा वृतांत सुना दिया। उसने इस समस्या का उपाय पूछा। ऋषि अंगिरा ने अपनी दिव्य दृष्टि से उस राज्य का निरिक्षण किया और फिर कहा कि तुम्हारे राज्य में कोई शूद्र शास्त्रों की शिक्षा ग्रहण कर रहा है, जो की महापाप है (उस युग में केवल ब्राह्मणों को ही शास्त्रों का अध्ययन करने की अनुमति थी)। इसी कारण तुम्हारे राज्य में वर्षा नहीं हो रही। तुम उस व्यक्ति का वध कर दो तो तुम्हारी समस्या हल हो जायगी। किन्तु राजा का मन नहीं माना, वह व्यक्ति भी उसकी प्रजा का ही हिस्सा था और वह अपनी प्रजा को कोई कष्ट नहीं पहुँचाना चाहता था। इस कारण उसने कोई और उपाय पूछा। तब ऋषि ने उसे आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की देवशयनी एकादशी का महत्व बताया और कहा यदि तुम इस एकादशी का व्रत निष्ठा पूर्वक करते हो तो अवश्य ही भगवान् विष्णु तुम पर कृपा करेंगे। यह सुन राजा अत्यंत प्रसन्न हुआ और राज्य में लौटकर उसने यह व्रत स्वयं भी किया और सारी प्रजा से भी इस व्रत को करने का अनुरोध किया। उनकी निष्ठा और भक्ति से भगवान विष्णु प्रसन्न हुए और उनकी कृपा से राज्य में जोरदार वर्षा हुई। और सारी प्रजा पहले की भांति सुखी हो गयी। इसके बाद से राजा सहित सारी प्रजा हर एकादशी के व्रत के निष्ठापूर्वक पालन करने लगी।

गुरू पूर्णिमा

गुरु पूर्णिमा तिथि :–

27 जुलाई 2018 (शुक्रवार)

पूर्णिमा तिथि प्रारम्भ : 23:16 (26 जुलाई 2018)

पूर्णिमा तिथि समाप्त : 01:50 (28 जुलाई 2018)

गुरु को समर्पित गुरु पूर्णिमा :–

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

अर्थात– गुरु ही ब्रह्मा है, गुरु ही विष्णु है और गुरु ही शंकर है। गुरु स्वयं साक्षात् परब्रह्म है तथा ऐसे सद्गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ।

गुरु शिष्य परंपरा वैदिक काल से ही चली आ रही है। गुरु को ईश्वर से भी उच्च स्थान मिला है, क्योकि गुरु ही है जो हमे ईश्वर को प्राप्त करने का मार्ग दिखाता है। इसलिए कबीर जी ने कहा है –

गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूं पांय।
बलिहारी गुरू अपने गोविन्द दियो बताय।।

अर्थात– गुरू और गोविन्द (भगवान) यदि एक साथ खड़े हों तो किसे प्रणाम करें दृ गुरू को अथवा गोबिन्द को? ऐसी स्थिति में गुरू के श्रीचरणों में शीश झुकाना उत्तम है क्योकि उन्ही की कृपा से हमें गोविन्द का दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

गुरु पूर्णिमा ऐसे ही गुरुओं को समर्पित है जिन्होंने सदैव बिना किसी लोभ के अपने शिष्यों को ज्ञान द्वारा भक्ति तथा मुक्ति का मार्ग दिखाया है। गुरु पूर्णिमा आषाढ़ मास की पूर्णिमा को कहा जाता है, जो इस वर्ष 27 फरवरी को पड़ेगी। गुरु

पूर्णिमा वर्षा ऋतू के आरम्भ में आती है तथा मौसम के दृष्टि से आने वाले चार मास विद्या ग्रहण के लिए उपयुक्त होते हैं। इस ऋतू में मध्यम गर्मी तथा मध्यम सर्दी होती है, तथा गुरुजन एक ही स्थान पर रहकर ज्ञान की गंगा प्रवाहित करते हैं।

वेद व्यास की जन्म तिथि :–

पौराणिक कथा के अनुसार महर्षि वेद व्यास का जन्म आषाढ़ मास की पूर्णिमा को हुआ था, इसलिए यह दिन गुरुओं को समर्पित है। महर्षि व्यास जी ने ही जनसामान्य को चारों वेदों का अर्थ समझाया था इसी कारण उन्हें 'वेद' व्यास भी कहा जाता है। वेद व्यास जी ने 18 पुराणों तथा 18 उपपुराणों की रचना की थी।

गुरु पूर्णिमा का दार्शनिक अर्थ :–

आषाढ़ मास में आसमान अक्सर बादलों से घिरा रहता है और उन बादलों के बीच से चन्द्रमा की किरणे निकल कर जग को प्रकाशित करती है। आषाढ़ मास में गुरु पूर्णिमा मानाने का आध्यात्मिक तथा दार्शनिक अर्थ है– जिस प्रकार पूर्णिमा के चंद्र की किरणे बादलों को चीरते हुए पृथ्वी को प्रकाशित करती है और शीतलता प्रदान करती है उसी प्रकार गुरु भी अपने ज्ञान से शिष्यों के मन की आशंका तथा अज्ञान को मिटा कर उसे ज्ञान रूपी प्रकाश से भर देता है। और उसके जीवन को अर्थपूर्ण बनाता है, उसके जीवन में एक लक्ष्य को निर्धारित करता है। इसीलिए कहा गया है,

गुकारस्त्वन्धकारस्तु रुकार स्तेज उच्यते।
अन्धकार निरोधत्वात् गुरुरित्यभिधीयते।।

अर्थात– 'गु'कार मतलब अंधकार, और 'रु'कार यानि तेजय जो अज्ञान रूपी अंधकार का निरोध करता है, वही गुरु कहलाता है।

गुरु पूर्णिमा का दिन है अपने गुरु को धन्यवाद करने का दिन, उनको पूजने का दिन तथा दिल से खुद को उनके चरणों में समर्पित करने का दिन। आप भी अपने गुरु के समक्ष अपना आभार प्रकट करें। इस दिन आप अपने माता पिता को भी धन्यवाद कर सकते हैं क्योकि वो भी हमारी प्राथमिक शिक्षा के गुरु हैं।

श्रावण मास

श्रावण मास की तिथि :–

श्रावण मास प्रारम्भ : शनिवार, 28 जुलाई 2018

श्रावण मास का पहला सोमवार : 30 जुलाई 2018

श्रावण मास का अंतिम दिन : रविवार, 26 अगस्त 2018

शिव शंकर को भोलेनाथ कहकर भी पुकारा जाता है, क्योंकि वह हैं ही इतने भोले। कहा जाता है की भगवानों में शिव जी को प्रसन्न करना सबसे आसान है। उनकी पूजा के लिए कोई बड़ा अनुष्ठान या कोई कष्टकारी उपाय नहीं होता, उन्हें भक्त अपनी श्रद्धा से ही प्रसन्न कर लेते हैं।

भोलेनाथ का प्रिय श्रावण मास :–

शिवजी को श्रावण मास अत्यंत प्रिय है, और इस मास में शिव के लिए किये गए कोई भी प्रयास उनको प्रसन्न करने कर देते हैं। श्रावण मास में सोमवार का व्रत कन्याओं के लिए अत्यंत लाभकारी बताया जाता है, क्योकि इस मास में रखे गए सोलह सोमवार के व्रत उनको अच्छा जीवनसाथी पाने में मदद करता है। स्त्रियां भी इस व्रत को पति तथा परिवार की खुशहाली के लिए करती हैं।

श्रावण का महीना शिव जी को प्रिय क्यों है इसके लिए अनेक कथाएं प्रचलित हैं– जैसे एक कथा के अनुसार श्रावण मास में भगवान विष्णु चार मास के लिए शयन करने पाताल लोक चले जाते हैं। जिससे की सारे विश्व की रक्षा का दायित्व शिव के ऊपर होता है।

एक अन्य कथा के अनुसार श्रावण मास में ही शिवजी

देवी पार्वती की हजारों वर्ष की तपस्या से प्रसन्न हुए थे और उन्हें पत्नी रूप में स्वीकार किया था। इसलिए यह माह कुवारी कन्याओं के लिए मनचाहा पति प्राप्त करने के लिए उपयुक्त बताया गया है।

सबकी झोली भरने वाले भोलेबाबा :—

भले ही भोलेबाबा को संहारकर्ता माना जाता है किन्तु फिर भी भोलेनाथ ने इस सृष्टि को कई बार बड़े बड़े संकटों से बचाया है। जब भी कोई ऐसा संकट आया जिसका सामना कोई भी देवता नहीं कर पाया, उस समय केवल शिव हैं जो सामने आये और मानवों के साथ साथ देवताओं की भी रक्षा की।

सबसे पहला उदाहरण है, सागर मंथन में निकला हलाहल विष। जिसके कारण सृष्टि पर एक बड़ा संकट आ गया था, किन्तु भोलेनाथ ने सबकी रक्षा हेतु उस भयंकर विष को खुद पी लिया और नीलकंठ हो गए। उस विष का ताप इतना अधिक था कि उसके ताप को कम करने के लिए चन्द्रमा उनके शीश पर विराज गए, जिससे उनको शीतलता प्राप्त हो।

दूसरा प्रसंग तब का है जब भगीरथ ने देवलोक से पृथ्वी में गंगा को लाने के लिए तप किया। गंगा का वेग पृथ्वी सहन नहीं कर पाती, इसलिए शंकर ने उसे अपनी जटाओं में धारण किया। शिव जी यदि क्रोध में आये तो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को भस्म कर सकते हैं किन्तु यदि किसी पर प्रसन्न हो जाये तो ऐसा कुछ नहीं जो वे न दे सकें।

कैसे करें शिव को प्रसन्न :—

श्रावण के महीने में शिवजी को जल अथवा दूध का अभिषेक किया जाता है तथा बेलपत्र भी चढ़ाया जाता है। श्रद्धालुओं को धतूरे के पुष्प तथा पत्तियां और भांग की पत्तियां भी अर्पित करनी चाहिए। ये सभी भोलेनाथ को अत्यंत प्रिय हैं और आसानी से उपलब्ध भी होती हैं। श्रावण मास में ज्योतिर्लिंग के दर्शनों के लिए श्रद्धालु तीर्थ यात्रा पर भी जाते हैं तथा इसी मास में लाखों कांवरिया भी कावड़ यात्रा पर देवभूमि उत्तराखंड में हरिद्वार जाकर गंगा जल कावड़ में भर कर लाते हैं और भोलेनाथ का अभिषेक करते हैं।

मंगला गौरी व्रत

मंगला गौरी व्रत की तिथि :—

31 जुलाई 2018 (मंगलवार)

तिथिः 03, श्रावण कृष्ण पक्ष, तृतीया, विक्रम सम्वत

मंगला गौरी व्रत का महत्व :—

मंगला गौरी का व्रत मुख्यतः कुंवारी कन्याओं द्वारा अच्छे पति के लिए रखा जाता है, किन्तु विवाहित महिलाएं भी इस व्रत को सुखी दाम्पत्य जीवन तथा पति की दीर्घायु के लिए रखती हैं। यह व्रत अत्यंत प्रभावशाली है। सावन का महीना (श्रावण मास) शिव तथा पार्वती दोनों को ही अत्यंत प्रिय है, अतः यह महीना सोलह सोमवार तथा मंगला गौरी के व्रत के लिए अत्यंत शुभ हैं। जो भी कन्या इस व्रत को विधिपूर्वक करती है उसे अच्छा वर तथा सुखी परिवार मिलता है।

यदि कन्या की कुंडली में विवाह में बाधा हो अथवा पति के लिए कोई दोष हो तो यह व्रत करने से उसकी सारी बाधाएं दूर होती हैं। यदि विवाहित महिलाएं इस व्रत को निष्ठापूर्वक करे तो उनके पति तथा संतानों की आयु बढ़ती है तथा उन्हें अखंड सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

मंगला गौरी व्रत की विधि :—

प्रातः काल उठकर स्नान आदि कर के शुद्ध श्वेत वस्त्र पहनने चाहिए। जल, रोली, मोली, चावल, धूप, दीप, नैवेद्य, फल, मिठाई, पान इत्यादि सामान एकत्रित कर के एक थाल में ले कर के अच्छी सी चौकी बनाएं। उस पर माँ भगवती गौरी की तस्वीर या प्रतिमा रखें उस प्रतीमा की पूजा करें। प्रतीमा के सामने एक कलश की स्थापना करें। तत्पश्चात

गणेश जी तथा नवग्रहों का पूजन करें। अब सर्वप्रथम जल से माता की प्रतिमा को स्नान कराएं, अच्छे वस्त्र पहनाएं। लाल चंदन का टीका लगाएं, अक्षत चढ़ाएं रक्त पुष्प अर्थात लाल पुष्प चढ़ाएं। उसके बाद धूप दीप दिखाएँ। दीप आटे का होना चाहिए और सोलह की संख्या में होना चाहिए। मंगला गौरी के व्रत में जो भी सामान अर्पित करें सोलह की संख्या में ही करें– जैसे फल, फूल, मेवा, मिठाइयां, पान आदि। इस से शीघ्र और उत्तम फल मिलता है। किसी ब्राह्मण से भी पूजन करवा सकते हैं। ऐसा हर श्रावण मास में करने से सुयोग्य वर, सुखी दाम्पत्य और पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है।

इस प्रकार 5 वर्ष तक श्रावण के महीने में हर मंगलवार को माता गौरा का व्रत करें। और पांचवें वर्ष में अंतिम मंगलवार को माँ गौरा का विधिवत श्रृंगार करके, सभी सामग्रियाँ उन्हें अर्पण करके आप पूजन करें और अंत में 16 ब्राह्मण सपत्नी को आमंत्रित करके भोजन करा कर के दक्षिणा दे कर के जो भी सामान माता को अर्पित किया है वो सभी ब्राह्मणों को दान दे दें। और कन्या पूजन कर के 16 कन्या को भी भोजन कराएं। ऐसा करने से कन्या को सुयोग्य वर, समय पर विवाह, सुखी दाम्पत्य तथा स्वस्थ संतान की प्राप्ति होती है।

मंगला गौरी व्रत की कथा :–

एक समय की बात है एक नगर में धर्मपाल नामक नगर सेठ था, वह अत्यधिक धनवान था। भगवान की कृपा से उसका व्यापार सम्पूर्ण नगर में फैला हुआ था। सभी सुख सुविधा होते हुए भी वह सुखी नहीं था, क्योकि उसकी कोई संतान नहीं थी। उसे हमेशा चिंता लगी रहती थी की उसके मरने पर कौन उसे अग्नि देगा और कौन उसके नाम को तथा व्यापार को आगे बढ़ाएगा। वह अपनी पत्नी के साथ सभी तीर्थ, सभी ज्योतिषों के तथा सभी वैद्यों के पास गया था, किन्तु किसी भी उपचार से उसे संतान की प्राप्ति नहीं हुई। उसकी पत्नी भी बहुत धार्मिक प्रवृत्ति की थी, और अपने पति को चिंतित देख वह भी दुखी थी।

एक दिन उसके द्वार पर एक सन्यासिन भिक्षा मांगने आई। वह दिखने में अत्यंत तेजस्वी थी, सेठ की पत्नी ने उसे भिक्षा दी। वह सन्यासिन उसके चेहरे को देखकर समझ गयी की वह दुखी है, उसने उसके दुःख का कारण पूछा। तो सेठानी ने बताया की उसकी कोई संतान नहीं है इसी कारण वह दुखी है। तब सन्यासिन ने उसे मंगला गौरी व्रत के माहत्म्य को बतलाया। और इस व्रत को करने की पूर्ण विधि बताकर निष्ठापूर्वक व्रत को करने को कहा। सेठानी को यह सुनकर अत्यंत खुशी हुई और उसी समय से वह व्रत की तैयारियों में लग गयी। आने वाले मंगलवार को उसने विधिपूर्वक व्रत किया और फिर हर व्रत को पूर्ण निष्ठां से करती गयी। कुछ महीनों में ही वह गर्भवती हो गयी और फिर नौ माह बाद उसे एक सुन्दर पुत्र प्राप्त हुआ।

एक दिन सेठ ने बालक की कुंडली पंडित जी को दिखाई, किन्तु कुंडली देखते ही पंडित जी गंभीर स्वर में बोले कि यह बालक अल्पायु है। 16 वर्ष में इसकी मृत्यु हो जायगी। यह सुनकर सेठ परेशान हो उठा किन्तु इसे भगवान की लीला समझ सब कुछ उन पर ही छोड़ दिया। समय आने पर उन्होंने बालक की एक सुयोग्य कन्या से शादी करा दी। वह कन्या बचपन से ही मंगला गौरी का व्रत किया करती थी, इस प्रकार सेठ के पुत्र का मृत्युयोग कट गया। और कन्या के व्रत के प्रभाव से उसे दीर्घायु प्राप्त हुई।

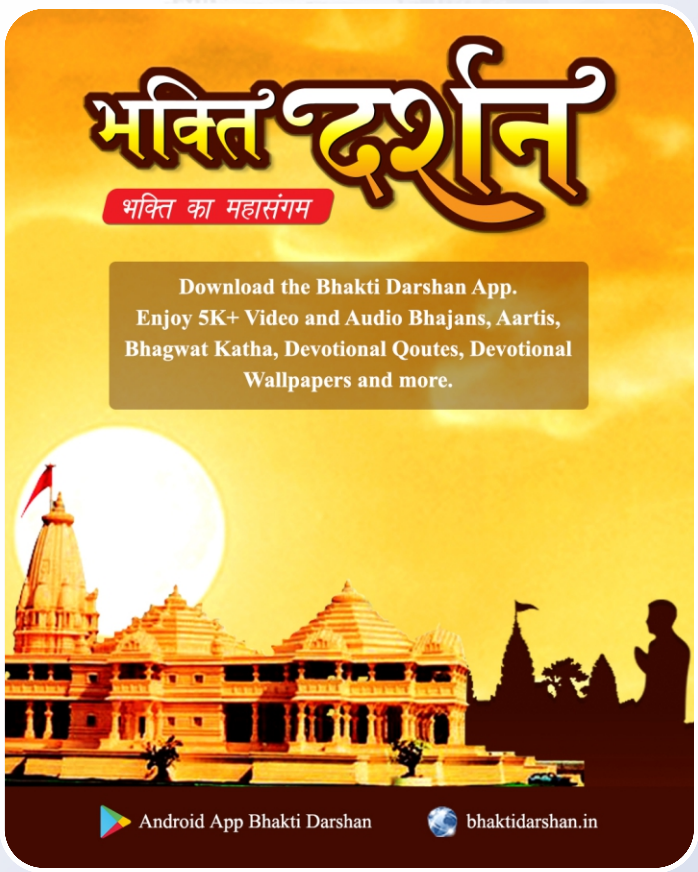

हृदय महोत्सव

हिमाचल प्रदेश राज्य के मंडी शहर में 'हृदयवासी सेवा न्यासी' द्वारा **'हृदय महोत्सव'** का आयोजन किया गया। मंडी में स्थित हृदय मंदिर, सिद्ध भद्र मंदिर के पास, में इसका भव्य आयोजन किया गया था, जिसमे भाग लेने के लिए सैकड़ों लोगों की भीड़ उमड़ी थी। महोत्सव 9 मई से 15 मई अर्थात 7 दिन तक चला। हृदय महोत्सव में कथा व्यास श्री इंद्रेश उपाध्याय जी और पूज्य मलूक पीठाधीश्वर 'श्री राजेंद्रदास जी महाराज' ने भक्तों को अपनी वाणी से मंत्रमुग्ध कर दिया। हृदय महोत्सव में बाल श्री कृष्ण का जन्मोत्सव भी मनाया गया।

श्री इंद्रेश उपाध्याय जी ने 9 मई से 15 मई तक प्रातः 10 बजे से शाम 1:30 बजे तक भक्तों को 'श्रीमद् भागवत' का रसपान कराया। जिसमे उन्होंने भक्तों को भक्ति के प्रकार, निर्गुण और सात्विक भक्ति का महत्व, भीष्म स्तुति तथा भगवान् श्री कृष्ण की बाल लीलाओं, गोपी–उद्धव संवाद आदि का वर्णन किया।

तथा 11 मई से 15 मई तक शाम 3:30 से 7 बजे तक मलूक पीठाधीश्वर 'श्री राजेंद्रदास जी महाराज' ने 'श्री भक्तमाल कथा' का रसपान भक्तों को कराया। उन्होंने श्रद्धा और विश्वास का महत्व, गुरु भक्ति, सात्विक वेश भूषा में निष्ठा, रावण–शिव का संवाद आदि पर विशेषतापूर्वक व्याख्यान किया।

साथ ही महाराज जी ने गौमाता की सेवा के लिए देवी चित्रलेखा द्वारा संचालित 'गौ सेवा धाम' और इंद्रेश जी द्वारा निर्मित 'गौ सेवा मंदिर' की भी अत्यंत प्रशंसा की। उन्होंने धरती पर फसल में रासायनिक छिड़काव को माता को जहर देने के समान बताया और प्राकृतिक खाद तथा गौ मूत्र से निर्मित कीटनाशक का उपयोग करने का निवेदन किया। उन्होंने राम मंदिर निर्माण तथा देश की पवित्र नदियों के उत्थान की भी बात की।

लगातार 7 दिनों तक चले इस महोत्सव में कथा के साथ साथ भजन, कीर्तन, आरती आदि ने सारा वातावरण भक्तिमय कर दिया। भक्तों ने न केवल कथा का आनंद प्राप्त किया बल्कि महाराज जी के मधुर भजनों पर जमकर नृत्य भी किया और प्रभु की कृपा प्राप्त की।

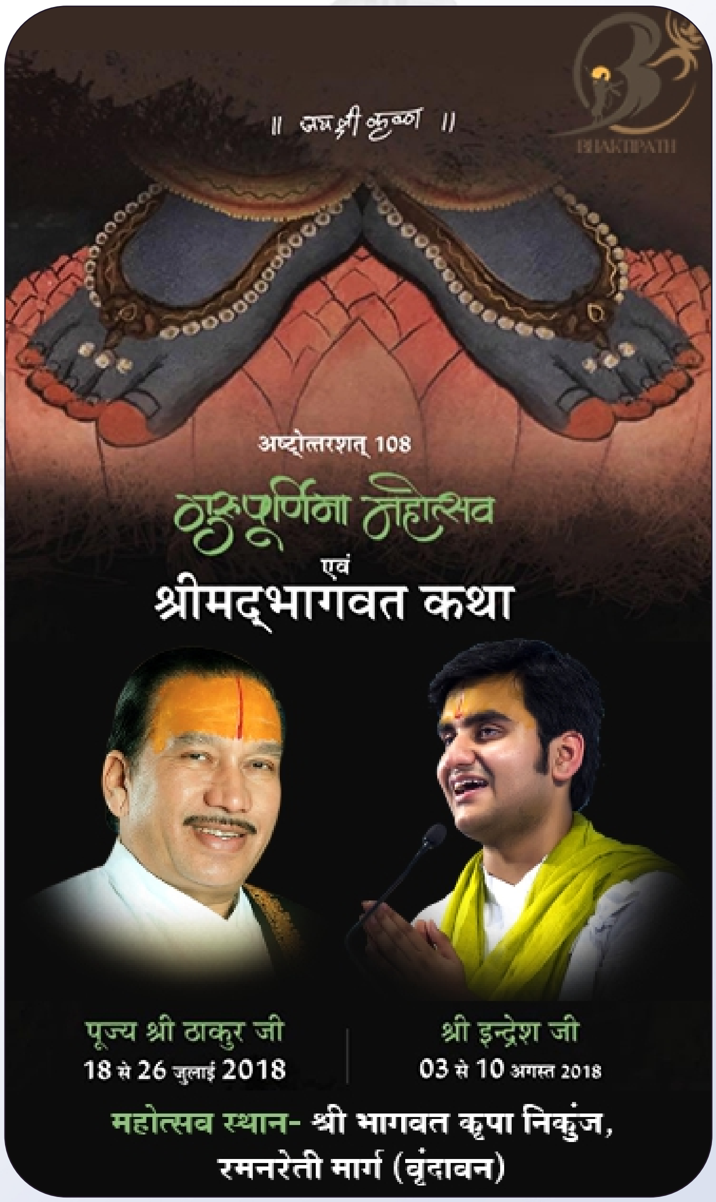

जुलाई माह का राशिफल

मेष राशि –

भाग्यशाली अंक: 7

भाग्यशाली रंग: डार्क ग्रे

इस महीने आप सकारात्मक ऊर्जा और उत्साह से भरे रहेंगे। पारिवारिक जीवन में भी खुशहाली रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधर होने के संकेत हैं, इस दौरान आपको अत्यधिक क्रोध से दूर रहना होगा वरना बनते हुए काम बिगड़ सकते है। इसके आलावा कार्यक्षेत्र में चल रही गॉसिप से भी दूर रहें। कुछ क्रिएटिव करने में समय व्यतीत करें।

वृष राशि –

अंक: 1

रंग: गुलाबी

वृषभ राशि के जातको के लिए जुलाई का महीना औसत रहेगा। इस दौरान आपको अपनी फिजूल खर्ची पर नियंत्रण रखने की आवश्यकता है। नहीं तो आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ सकता है। परिवार में किसी शुभ कार्य का आयोजन हो सकता है। बड़े बुजुर्गो के सहयोग से महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता मिलेगी।

मिथुन राशि –

अंक: 2

रंग: क्रीम

मिथुन राशि के लोगो के लिए जुलाई का महीना बहुत ही बढ़िया रहेगा। प्रेमी संग बाहर घूमने का प्लान बना सकते हैं। आर्थिक क्षेत्र में विकास के अवसर बढ़ने के योग बन रहे है। पार्टनर शिप में बिसनेस कर रहे जातको के लिए भी यह समय बढ़िया रहेगा। इस दौरान जल्दबाजी में कोई भी फैसला लेने से बचे। विदेशी व्यापर से जुड़े लोगो को भी आर्थिक फायदा होने की अपार संभावना है।

कर्क राशि –

अंक: 11

रंग: गाढ़ा आसमानी नीला

करियर के लिए यह महीना आपके लिए उन्नतिदायक रहेगा। दाम्पत्य जीवन खुशहाल रहेगा। परिवार या पार्टनर के साथ लम्बी दुरी की यात्रा पर भी जा सकते है। स्वास्थ्य को लेकर कोई भी लापरवाही ना करें। पारिवरिक आय में वृद्धि होने के योग बन रहे है साथ ही पार्टनर के सहयोग से आप कोई नया कार्य भी शुरू कर सकते है।

सिंह राशि –

अंक: 7

रंग: गोल्डन

जुलाई का महीना सिंह राशि के जातको के लिए सामान्य रहेगा। इस दौरान धन खर्चे अधिक बढ़ सकते है। आप अपनी आर्थिक स्थिति को और अधिक मजबूत करने के लिए अतिरिक्त मेहनत करेंगे। वे जातक जिनके विवाह की उम्र हो चुकी है उनके लिए शादी के प्रस्ताव भी आ सकते है। इस दौरान आपको अपनी सेहत का ध्यान रखना होगा।

कन्या राशि –

अंक: 9

रंग: पीला

लव लाइफ के लिहाज से यह महीना आपके लिए बहुत ही शानदार रहने वाला है। किसी नए कार्य को करने की योजना आप बना सकते है। भौतिक सुख साधनो में अधिक धनव्यय हो सकता है। लेकिन आर्थिक स्थिति बढ़िया रहेगी। किसी भी काम में निवेश करने से पहले एक बार उस फील्ड से जुड़े अनुभवी व्यक्ति की सलाह जरूर ले।

तुला राशि –

अंक: 8

रंग: नीला

जुलाई का महीना तुला राशि के जात के लिए शुभ रहेगा। अचानक धन लाभ के योग बन रहे है। किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के सहयोग से आपको कार्य क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त हो सकती है।सरकारी क्षेत्र में सफलता के लिए थोड़ा अधिक संघर्ष करना पड़ सकता है। सेहत भी इस

माह बढ़िया रहेगी। पूर्व में किये गए प्रयास लबदायक सिद्ध होंगे। कार्यक्षेत्र में प्रमोशन व सैलरी वृद्धि के योग बन रहे है।

वृश्चिक राशि –

अंक: 2

रंग: नारंगी

पारिवारिक व आर्थिक उलझने दूर होंगे। अतिरिक्त आय के नए साधन सामने आएंगे। सरकारी योजनाओ से लाभ प्राप्त होगा। सेहत इस दौरान बढ़िया रहेगी। जो छात्र सरकारी नौकरी परीक्षा की तैयारी कर रहे है उन्हें अपनी मेहनत और बड़ा लेनी चाहिए क्योकि इस दौरान आपको आपकी मेहनत के अच्छे रिजल्ट जरूर देखने को मिलेंगे।

धनु राशि –

अंक: 1

रंग: बेबी पिंक

करियर के मामले में यह माह आपके लिए बहुत ही खास रहेगा। इस दौरान आपको कोई शुभ समाचार मिल सकता है। नौकरी ढूंढ रहे जातकों को नौकरी मिल सकती है। सेहत के प्रति किसी भी प्रकार की लापरवाही ना बरतें। व बहुत जल्दी ही अजनबियों की बातों पर विश्वास ना करें।

मकर राशि –

अंक: 4

रंग: ग्रे

जुलाई का महीना मकर राशि के जातको के लिए शुभ रहेगा। इस दौरान आपकी सभी मानसिक परेशानिया दूर होंगी। आप अपनी आर्थिक स्थिति को और अधिक बढ़िया बनाने के लिए अतिरिक्त प्रयास भी कर सकते है। काम के सिलसिले में दूरस्थ यात्राएं करनी पड़ सकती है। काम की अधिकता के कारण इस माह आप अपने लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे।

कुंभ राशि –

अंक: 11

रंग: नारंगी

व्यवसाय विस्तार के लिए यह महीना आपके लिए उत्तम रहेगा हालाँकि इस दौरान आपको व्यवसाय में थोड़ा अधिक संघर्ष करना पड़ सकता है। घर परिवार में किसी शुभ कार्य का आयोजन हो सकता है। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। कार्यक्षेत्र में आपके कार्यों की प्रसंशा हो सकती है साथ ही आय वृद्धि के भी योग बन रहे है।

मीन राशि –

अंक: 3

रंग: गहरा लाल

इस महीने आपको अपने परिश्रम से अच्छे धन लाभ के अवसर मिलेगी। बिगड़े कार्यों में सुधार होने के योग बन रहे है। बिसनेस में पार्टनरशिप सोच – समझकर ही करें। लव लाइफ के लिए भी यह महीना आपके लिए बढ़िया रहेगा। हालाँकि पार्टनर से बातचीत करते समय धैर्य रखें और उनकी भावनाओ को भी समझने का प्रयास करें।

॥ भक्ति दर्शन ॥

भक्ति का महासंगम

भक्ति दर्शन
भक्ति का महासंगम

web: bhaktidarshan.in

DOWNLOAD THE BHAKTI DARSHAN APP.
ENJOY 5K+ VIDEO AND AUDIO BHAJANS, AARTIS, BHAGWAT KATHA,
DEVOTIONAL QUOTES, DEVOTIONAL WALLPAPERS AND MORE.